Dr. Vandana Suman
Professor
Dept - of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Aatman: Jain Darshan"
(जैन दर्शन में आत्मा विचार)

जैन दर्शन में शरीर से आत्मा को अलग एवं स्वतंत्र माना गया है। भगवान महावीर की वाणी में धर्माचरण, अर्थात् संयम, तप, जाप, स्मरण, स्वाध्याय और चिन्तन आदि का अन्तिम प्रयोजन आत्म तत्व की स्वतंत्र सत्ता में स्वीकार किया गया है। वैज्ञानिक प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि संसार में अनेक प्रकार के ऐसे पदार्थ हैं, जो न तो इन्द्रियों से दृष्टिगोचर होते हैं और जिनको न तो स्पर्श किया जा सकता है, किन्तु वे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। आत्मा ऐसा ही पदार्थ है। इसको न तो देखा जा सकता है और न छुआ ही जा सकता है, किन्तु इसका अस्तित्व है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं। वह चेतन है और इसका अस्तित्व जीव के द्वारा मैं तथा 'हूँ' के रूप में अहर्निश प्रमाणित होता है। कर्मों की दृष्टि से आत्मा और शरीर की पृथकता स्पष्ट हो जाती है। अनादि काल से आत्मा के साथ कर्म बंधे हुए हैं और इसलिए पुनर्जन्म तथा परलोक का सिद्धान्त अभ्रान्त तथा यथार्थ सिद्ध होता है। प्रत्येक

प्राणी के शुभ और अशुभ कर्म आत्मा के साथ जुड़कर प्राणी के जन्म-जन्मान्तरों तक चलते हैं। जहाँ तक कर्मफल भोग शेष रहते हैं वहाँ तक आत्मा का उनसे सम्बन्ध बना रहता है और जीव उनका अनुभव करता रहता है। कर्मफलों की अवधि समाप्त हो जाने पर आत्मा स्वतंत्र हो जाता है। जीव की यह अवस्था जीवन्मुक्त कही जाती है।

जैन दर्शन में जीवों की दो श्रेणियाँ मानी गयी हैं: संसारी और मुक्त। संसारी जीव की अपरावस्था ही मुक्त जीव है। यह संसारी जीव भी दो प्रकार का होता है: त्रस और स्थावर। जिनमें सुख प्राप्त करने और दुःख से विमुक्त होने की प्रवृति है वे त्रस और जिनमें यह प्रवृति नहीं है वे 'स्थावर' कहलाते हैं।

जैन दर्शन की दृष्टि से द्रव्यरूप में जीव अनन्त हैं, किन्तु ज्ञानरूप में एक है। इसलिए द्रव्यरूप से प्रत्येक व्यक्ति में आत्मा भिन्न-भिन्न है और ज्ञानरूप से एक है।

जैन मत से जो आत्मा है, वह विज्ञाता है, जो विज्ञाता है, वह आत्मा है। जिससे जाना जाता है वह आत्मा है। जानने के सामर्थ्य के द्वारा ही आत्मा

की प्रतीति सिद्ध होती है। इसके स्वरूप को पकड़ा नहीं जा सकता।

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने कहा है कि आत्मा मुक्त है। वह न बड़ा है, न छोटा है, न गोल है न त्रिकोण है, न चौरस है, न मण्डलाकार है। न काला है, न नीला है, न लाल है, न पीला है, न श्वेत है, न सुगंधिवाला है, न दुर्गंधिवाला है। न कड़वा है न खट्टा है, न कसैला है, न मीठा है। न कठोर है, न कोमल है, न भारी है, न हल्का है। न ठण्डा है, न गर्म है, न चिकना है, न रूखा है।

उसका न तो शरीर है न तो पुनर्जन्म होता है। वह न तो स्त्री है, न पुरुष और न नपुंसक ही। उसके लिए कोई शब्द नहीं है, उसका कोई रूप नहीं और उसके लिए कोई उपमा नहीं।

वह ज्ञाता है, परिज्ञाता है